<u>प्रख्यापन</u>

यह लघु शोध – प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल. के लघु शोध – प्रबंध के रूपमें प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है ।

शोधछात्र

दिनांक : 12 दिसम्बर, 1995

कोल्हापुर ।

AJI UNIVERSITY
LIBRARY
LHAPU

डॉ. पी. एस. पाटील
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-416004

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **श्री. सिद्राम कृष्णा खोत** का " मैथिलीशरण गुप्त के यशोधरा काव्य का अनुशीलन " लघुशोध प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

दिनांक : 12 दिसम्बर, 1995
कोल्हापुर ।

(डॉ. पी. एस. पाटील)

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

प्रा. डॉ. श्रीमती शशिप्रभा जैन,
एम्. ए. [हिन्दी] एम. ए. [समाजशास्त्र]
पी. एच. डी.
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री. सिद्राम कृष्णा खोत ने मेरे निर्देशन में यह लघुशोध प्रबन्ध एम्. फिल् उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है । जो लक्ष्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है ।

निर्देशिका,

रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर ।

कोल्हापुर ।
दि. १२ दिसम्बर १९८५ ।

- प्राक्कथन -

मैथिलीशरण गुप्तजी सच्चे अर्थों में राष्ट्रकवि थे, उन्होंने अपने समय में व्याप्त सामाजिक और राजनैतिक स्थिति का अवलोकन कर उससे संबंधित काव्य लिखे। गुप्तजीने खड़ीबोली को काव्यभाषा के रूपमें प्रतिष्ठित किया। गुप्तजीकी रचनाओं में सामाजिक जीवन के उतार चढ़ाव को वाणी मिली है। युग जीवन को चित्रित करनेवाली इन रचनाओंमें भारतीय संस्कृति और भारतीय जीवन का उल्लास, विषाद भी सहज ही स्थान पा गया है। कविने पारिवारिक स्थितियोंका सही माने में हर तरह का समुचित रूप काव्य में प्रतिष्ठित किया है तथा नारी जाति को कर्तव्यविमुख न होने देकर आत्मसम्मान का संदेश दिया। उनके काव्य में यथार्थ का आदर्श रूप प्रस्तुत हुआ है। कुल मिलाकर गुप्तजी एक सफल कवि हैं।

मुझे मैथिलीशरण गुप्त कृत "यशोधरा" काव्य का अध्ययन करने का मौका एम.ए. में मिला। "यशोधरा" खण्डकाव्यसे प्रभावित होकर मैं ने कवि के अन्य काव्य का अध्ययन किया। इसी समय "यशोधरा" काव्य का अनुशीलन करने की कल्पना निर्माण हुयी। नये विचार, नयी शिल्पशैली और पुराने विचार को नये विचार देने की कल्पना से उनके साहित्य का आकर्षण पैदा हुआ।

मैंने एम.ए. करने के पश्चात जब एम.फिल [हिन्दी] में प्रवेश लिया, तो अनायासही मेरे सामने मैथिलीशरण गुप्त का काव्य साकार हो उठा। जब इस विषय का प्रस्ताव गुरूवर्य डॉ. शशिप्रभा जैनजी के सम्मुख रखा तो उन्होंने स्वीकृती दी तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत भी किया।

अनुसंधान के विषय का शीर्षक "मैथिलीशरण गुप्त के "यशोधरा" काव्य का अनुशीलन है। मैथिलीशरण गुप्तजीपर विभिन्न दृष्टिकोणसे काफी अनुसंधान हुआ है, परन्तु उपर्युक्त विषय को लेकर अनुसंधान नहीं हुआ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने इस शोध प्रबन्ध को चार अध्यायों में बाँटा है ।

प्रथम अध्याय में मैथिलीशरण गुप्त का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व है । जिसमें गुप्त का जीवन परिचय एवं कृतित्त्व का परिचय दिया है ।

व्दितीय अध्याय का शीर्षक "यशोधरा" काव्य का संक्षिप्त परिचय है। इनमें यशोधरा काव्य की कथावस्तु और कथावस्तु की विशेषताएँ है ।

तीसरे अध्याय का शीर्षक "यशोधरा काव्य में चरित्र चित्रण" है। इसमें "यशोधरा" काव्य के पात्र यशोधरा, सिध्दार्थ, शुध्दोदन, राहुल, महाप्रजावती, नन्द, छन्दक, का संक्षिप्त परिचय दिया है ।

चौथे अध्याय में यशोधरा काव्य की विशेषताएँ है । इसमें यशोधरा एक खण्डकाव्य, यशोधरा काव्य में भारतीय संस्कृति, यशोधरा काव्य में प्रकृतिवर्णन, यशोधरा काव्य में विरहवर्णन, यशोधरा काव्य में नारीभावना, यशोधरा काव्य में गीतात्मकता, यशोधरा काव्य में काव्य सौंदर्य, - यशोधरा काव्य की भाषा शैली ; यशोधरा काव्य का उद्देश्य आदि का विश्लेषण दिया है ।

अंत में उपसंहार है, जो शोधप्रबन्ध का निचोड है, इसके बाद परिशिष्ट जोड दिया है ।

ऋ ण नि र्दे श

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध को मैं पूरा कर पाया इसका श्रेय मेरे आदरणीय गुरुवर्य मार्गदर्शिका डॉ. सौ. शशिप्रभा जैनजी को है । उनके मार्गदर्शन के लिए मैं अत्यन्त ऋणी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पी.एस.पाटील एवं प्रा. डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. मोरेजीने मुझे काफी सहायता की उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली के प्रा. पवार, खाडिलकर, सावंत, इंगवलेजीने मुझे समय समयपर प्रोत्साहित किया इसलिए उनका भी आभार मानना मेरा कर्तव्य है ।

श्रीमती चंपाबेन शाह महिला महाविद्यालय सांगली के सहृदया और उदारमना प्राचार्या हेमलताबेन कोठारीजी के प्रति भी मैं आभारी हूँ । जिनका उत्साहवर्धक प्रोत्साहन और आशिर्वाद मुझे सदैव मिलता रहा, सांगली महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्षा डॉ. मीनाक्षी खाडिलकर एवं प्रा. उदगांवकर और एल. आर.पाटील का भी मैं हृदयसे आभारी हूँ ।

शोधकार्य पूरा करने के लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, विलिंग्डन महाविद्यालय सांगली, श्रीमती चंपाबेन शाह महिला महाविद्यालय सांगली के पुस्तकालयोंसे ग्रन्थ प्राप्त किये अत: इन पुस्तकालयोंके ग्रंथपालोंका भी मैं आभार मानता हूँ ।

श्रीमती.जे. आर. कुलकर्णी को भी धन्यवाद देना नहीं भूला जा सकता जिन्होंने अत्यंत रुचि एवं श्रमसे समस्त टंकन कार्य संपादित किया है ।

अ नु क्र म णि का

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय - मैथिलीशरण गुप्त का व्यक्तित्व एवं कृतित्व। 1....26

द्वितीय अध्याय- "यशोधरा" काव्य का संक्षिप्त परिचय। ..27....43

तृतीय अध्याय - "यशोधरा" काव्य में चरित्र चित्रण। ..44....62.

चतुर्थ अध्याय - "यशोधरा" काव्य की विशेषताएँ। ..63...122

१. "यशोधरा" एक खण्डकाव्य। ..
२. "यशोधरा" काव्यमें भारतीय संस्कृति। ..
३. "यशोधरा" काव्यमें प्रकृतिवर्णन। ..
४. "यशोधरा" काव्यमें विरहवर्णन। ..
५. "यशोधरा" काव्यमें नारीभावना। ..
६. "यशोधरा" काव्यमें गीतात्मकता। ..
७. "यशोधरा" काव्यमें काव्यसौंदर्य। ..
८. "यशोधरा" काव्यमें भाषाशैली। ..
९. "यशोधरा" काव्य का उद्देश्य। ..

उपसंहार .. .. ..123....129
आधारग्रन्थ सूची .. ..130....133
संदर्भग्रन्थ सूची .. .. ..134....135